5.5 अनुवाद मूल्यांकन के आधार

पिछले पाठ्यक्रमों के अध्ययन से आपने यह अनुभव किया होगा कि अनुवाद अध्ययन का मुद्दा एक बड़ा ही जटिल, विवादास्पद तथा संवेदनशील मुद्दा है। अभी तक किसी ऐसे सुनिश्चित एवं संपुष्ट आधार की खोज अंतिम रूप से नहीं हो पाई है जिसके प्रयोग से असंदिग्ध और विभ्रांति रूप से किसी अनुवाद का मूल्यांकन किया जा सके। तथापि, कुछ विद्वानों द्वारा वर्णित आधार यहाँ प्रस्तुत किए जा रहे हैं। नाइडा और टेबर ने अनुवाद मूल्यांकन के तीन आधार बताए हैं-(1) संदेश का सहज संप्रेषण; (2) पठनीयता द्वारा बोधन और (3) अनुवाद की पर्याप्तता से पाठक की अभिरुचि। ये आधार अच्छे अनुवाद की बात तो करते हैं, किंतु मूल्यांकन द्वारा अच्छे-बुरे अनुवाद में स्पष्ट भेद नहीं कर पाते, क्योंकि इन आधारों में वैज्ञानिकता और वस्तुनिष्ठता नहीं मिलती। इसके बाद इन दोनों विद्वानों ने अनुवाद मूल्यांकन के निम्नलिखित आधार प्रस्तावित किए हैं जो अनुक्रिया संबंधी प्रभाव को मापने के लिए प्रायोगिक प्रतीत होते हैं। इनके प्रकार इस तरह बताए गए हैं :

(क) क्लोज़ (cloze) परीक्षण

(ख) बोधन (Comprehension) परीक्षण

(ग) सस्वर पठन

(घ) उत्तम अनुवाद से तुलना

(क) क्लोज़ (Close) परीक्षण

अनुवाद मूल्यांकन के आधार के रूप में इसका प्रयोग तो 1953 से ही टेबर ने करना आरंभ कर दिया था। गेस्टॉल्ट मनोविज्ञान 'कलोश्ज़र' सिद्धांत के अनुसार यदि इसमें एक निश्चित संख्या के बाद जैसे पाँचवें, सातवें, नौवें आदि शब्दों को अनूदित पाठ में से निकालकर पाठक को दे दिया जाता है और उनसे रिक्त स्थानों की पूर्ति करने के लिए कहा जाता है। पाठक उस रिक्त स्थान पर जिस शब्द को उपयुक्त एवं सटीक समझता है उसकी पूर्ति कर देता है। इसके बाद पूर्तियों से मिलान करके देखा जाता है कि पाठक के अनुमान कितने सही हैं। इस परीक्षण के पीछे दर्शनिक आधार यह है कि यदि पाठक को संपूर्णता का आभास है तो वह उसमें पाई जाने वाली रिक्तियों को यथासंभव समीपस्थ शब्दों द्वारा स्वतः ही भर लेगा। परंतु एक अच्छी मूल्यांकन पद्धति होने के बावजूद रिक्त स्थानों की पूर्ति करते समय सही विकल्पों के चयन के अभाव तथा पाठक का मूलपाठ से संपर्क न होने के कारण यह मूल्यांकन एक पक्षीय रह जाता है। इस पद्धति से एक प्रकार की चयन अराजकता की भी आशंका हो जाती है

(ख) बोधन (Comprehension) परीक्षण

बोधन परीक्षण के अंतर्गत किसी अनूदित पाठ पर आधारित ऐसे प्रश्न बनाए जाते थे जिनसे उसमें निहित सूचना तत्वों की पकड़ (समझ) का आकलन हो सके। यदि मूलपाठ में प्रयुक्त सामाजिक, सांस्कृतिक और सौंदर्यवर्धक तथ्यों का अनूदित पाठ के माध्यम से बोध सहज रूप से होता है तो उसे अच्छा अनुवाद माना जाता है। यहाँ यह महत्वपूर्ण है कि प्रश्नकर्ता कौन है तथा क्या वह लक्षित पाठ का सही-सही आशय जान पाया है, या नहीं।

(ग) सस्वर पठन अथवा वाचन परीक्षण

पाठ की उपयुक्तता एवं संपूर्णता का यह आधार प्राचीन संस्कृत ग्रंथों के सस्वर वाचक जैसी ही है। नाइडा और टेबर ने किसी अनूदित पाठ के सस्वर पठन अथवा वाचन को भी एक आवश्यक आधार माना क्योंकि इसमें तीन-चार लोगों से अनुवाद का सस्वर वाचन करने के लिए कहा जाता है और यह देखा जाता है कि वाचन करते समय वाचनकर्ता कहाँ-कहाँ भटकता है, हिचकता है या त्रुटियाँ करता है इससे भाषा की लय और संप्रेषणीयता अधिक सहज हो सकती है। इसमें पाठ का सस्वर पाठ, तत्पश्चात् उसमें निहित संदेश का संवाहन तथा उच्च स्वर से पाठन वास्तव में अनूदित पाठ को संप्रेषणीयता हेतु परखने के चरण हैं।

वाचन-परीक्षण की यह पद्धति सिद्धांत रूप में अच्छी लगती है किंतु व्यावहारिक रूप में लंबी प्रक्रिया है। इसमें एक व्यक्ति की राय पर निर्भर न रहकर अनेक व्यक्तियों की राय उभर आती है और उसमें भिन्नता की संभावना

रहती है। इसमें विभिन्न व्यक्तियों के अपने ज्ञान और उनकी अभिव्यक्ति क्षमता का पता तो चल सकता है किंतु अनुवाद की कमियों की जानकारी नहीं मिल पाएगी और न ही अनुवाद के विभिन्न शैलीगत रूपों का पता चल पाएगा।

(घ) उत्तम अनुवाद से तुलना अर्थात् तुलनात्मक परीक्षण

किसी उत्तम अनुवाद से तुलना करते हुए अनुवाद का मूल्यांकन करना भी एक निर्णायक आधार मान लिया गया जिसके चयन के लिए कुछ सक्षम निर्णायकों की राय ले ली जाती है और इसी के आधार पर विशिष्टपाठक वर्ग से अनूदित पाठ से संबद्ध प्रश्न भी पूछे जाते हैं। उत्तम अनुवाद का चयन तथा अनूदित पाठ के साथ उसकी साम्यता का प्रश्न यहाँ महत्वपूर्ण माना जाता है।

ये सभी पद्धतियाँ उपयोगी होते हुए भी व्यावहारिक दृष्टि से अनुवाद का मूल्यांकन करने में पूरी तरह सक्षम नहीं थी क्योंकि इस संबंध में जो भी प्रयोग किए गए, वे या तो बहुत सीमित थे या बहुत कृत्रिम और जटिल। उदाहरण के लिए किसी उत्तम अनुवाद का चयन सक्षम निर्णायकों की राय से ही हो सकता है किंतु इन सक्षम निर्णायकों की वास्तविक क्षमता का निर्णय अपने में संदेहास्पद बन जाता है। इसके अतिरिक्त ये सभी मूल्यांकन पद्धतियाँ वस्तुनिष्ठ होने की अपेक्षा व्यक्तिनिष्ठ अधिक है और दूसरे, मूलपाठ से इसका कोई संबंध नहीं रखा गया जिससे जाँच करने पर सही एवं सटीक को खोज निकालने में सुविधा हो। इन पद्धतियों में बोधगम्यता की मात्रा को ध्यान में रखकर मूल्यांकन किया जाता है लेकिन अच्छे अनुवाद का मूल्यांकन मूलपाठ को बिना ध्यान में रखे सही नहीं हो सकता। इन परीक्षणों से पाठ की बोधगम्यता, प्रवाहशीलता, स्वाभाविकता आदि की जाँच तो की जा सकती है किंतु गुणवत्ता को नहीं मापा जा सकता।

इन पद्धतियों की प्रतिक्रियास्वरूप अनुवाद मूल्यांकन में जो विचारधारा विकसित हुई उसमें पहली बार मूलपाठ के महत्व को समझते हुए अनूदित पाठ का मूल्यांकन करने की विधियाँ प्रस्तावित की गईं। उदाहरण के लिए, यह सुझाव दिया गया कि मूल का विश्लेषण किया जाए तो विभिन्न अनुवादों का मूल्यपरक वर्गीकरण किया जा सकता है। इस दृष्टिकोण का सबसे महत्वपूर्ण और व्यवस्थित अध्ययन जुलियाना हाउस ने किया। इस अनुवादशास्त्री ने मूलपाठ के विश्लेषण के लिए दो प्रमुख आधार माने :

(1) भाषा प्रयोक्ता; और
(2) भाषा प्रयोग।

भाषा प्रयोक्ता के अंतर्गत प्रादेशिक आधार, सामाजिक वर्ग तथा काल संबंधी तत्वों को विश्लेषित किया जाता था जबकि भाषा प्रयोग में भाषा-माध्यम, सहभागिता का स्तर, सामाजिक भूमिका और विधापरक तत्वों को आधार बनाते हुए मूल आधार पर तथा अनूदित पाठों के शैलीगत पार्श्विक तैयार कर लिए जाते थे और उनकी तुलना के आधार पर अनूदित पाठ का मूल्यांकन किया जाता था। अनुवाद व्यवहार के लगभग 200 वर्ष के ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में अनुवाद मूल्यांकन का इतना विस्तृत और सुव्यवस्थित प्रारूप पहले उपलब्ध नहीं था किंतु इस प्रारूप में एक मूलभूत दोष इसकी व्यावहारिक उपयोगिता का था। इस प्रारूप के आधार पर मूल तथा अनूदित पाठ का शास्त्रबद्ध विश्लेषण अपने आप में ही एक जटिल समस्या थी।

अनुवाद मूल्यांकन के उभरते हुए क्षितिजों में से एक उपयोगी घटना अनुवाद दोष विश्लेषण के रूप में सामने आई इसके प्रणेता थे दो अनुवाद विशेषज्ञ-ब्रिसलिन और बैरिक। इस संकल्पना की मुख्य मान्यता कोडीकरण और विकोडीकरण की दोहरी प्रक्रिया पर आधारित थी और और इसका उपादान था पुनरनुवाद। इसे निम्नलिखित आरेख द्वारा समझा जा सकता है।

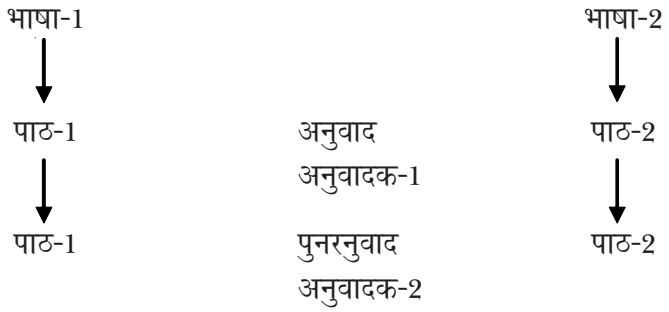

जो भाव भाषा-1 में कोडीकरण करते हुए पाठ-1 के रूप में लेखक द्वारा प्रस्तुत किए जाते हैं, वे विकोडीकरण करने के बाद किसी दूसरी भाषा में अनुवादक द्वारा कोडीकृत किए जाते हैं। ऐसे अनूदित पाठ में व्यक्त भावों को विकोडीकृत करते हुए वही या अन्य अनुवादक पुनः कोडीकृत कर देते हैं। फलस्वरूप मूल्यांकक के मूलभाषा के दो पाठ उपलब्ध हो जाते हैं-(1) मूलपाठ; तथा (2) पुनरनुवाद द्वारा प्राप्त पाठ। इन दोनों की तुलना करने के बाद ब्रिसलिन और बैरिक ने यह प्रस्तावित किया कि विषम तत्वों को चार वर्गों में रखा जा सकता है-(क) वृद्धि, (ख) लोप, (ग) स्थानापत्ति और (घ) संरचना विकृति। अर्थात् अनूदित पाठ में अनुवादक कुछ ऐसे अंश जोड़ सकता है जो मूलपाठ में नहीं थे या कुछ अंश छोड़ सकता है जो मूलपाठ में थे। इसके अतिरिक्त वह अनुवाद करते समय उचित शब्द के स्थान पर किसी कम उचित अभिव्यक्ति को स्थानापन्न (Substitute) कर सकता है और कभी-कभी पूरी धारणा को विकृत रूप भी दे सकता है। लेखकद्वय के अनुसार इन आधारों पर अनूदित पाठ का मूल्यांकन अच्छी तरह से किया जा सकता है। उन्होंने इस प्रक्रिया के कुछ अन्य लाभ भी बताए हैं; जैसे-

1. कोई ऐसा व्यक्ति भी अनुवाद का मूल्यांकन कर सकता है जिसे न तो अनुवाद का कुछ ज्ञान हो, न ही लक्ष्यभाषा का।
2. इस प्रविधि से अनुवाद प्रक्रिया का आंतरिक पक्ष भी स्पष्ट हो जाता है।
3. अनूद्य रचना के लिए कुछ निश्चित आधार बनाए जा सकते हैं अर्थात् किसी रचना की अनुवाद प्रक्रिया में से गुजरने से पहले ही यह देखा जा सकता है कि सामान्य रूप से किस प्रकार के अंश लोप या विकृति के शिकार हो सकते हैं और इनसे बचने के लिए पहले ही संपादन करते हुए आवश्यक संशोधन किए जा सकते हैं।

जैसा इस चर्चा से स्पष्ट है, इस प्रक्रिया का मुख्य बिंदु पुनरनुवाद है जिस पर हम प्रारंभ में चर्चा कर चुके हैं। यह प्रविधि आठवें दशक में इस प्रकार उभरकर आई मानो पहली बार इस धारणा को स्थापित किया गया है। किंतु यह सुखद आश्चर्य का विषय है कि लगभग 70-80 वर्ष पहले मैसूर के एक लगभग अज्ञात अनुवादशास्त्री रघुनाथराव ने बहुत पहले ही इस संकल्पना के उपयोगी पक्ष की ही नहीं उसकी सीमाओं की भी चर्चा कर दी थी जबकि परवर्ती प्रस्ताव (अर्थात् ब्रिसलिन और बैरिक की 60 वर्ष बाद की धारणा) में कोई जिक्र नहीं है। रघुनाथराव का कहना था कि पुनरनुवाद का उपयोग अनुवाद मूल्यांकन के लिए कुछ सीमा तक तो किया जा सकता है किंतु यह ध्यान रखना चाहिए कि पुनरनुवाद मूल कृति नहीं है और न ही मूल कृति के समकक्ष हो सकता है। यदि रघुनाथराव अनुवाद की आधुनिक विचारधारा से परिचित होते तो यह भी कह सकते थे कि इस विधि से दोहरा क्षय होता है और दुबारा प्राप्त की हुई कृति में इस संभावना का ध्यान रखा जाना चाहिए। दूसरे शब्दों में पाठ-1 का अनुवाद करते समय कुछ अनिवार्य क्षय तो होगा ही, जिसके उपरांत पाठ-2 प्राप्त होगा और यदि पाठ-2 का पुनरनुवाद कराया जाए तो अनुवाद का अनिवार्य क्षय होने के बाद ही पाठ-1 प्राप्त होगा। अतः अनुवादक-1 के कार्य का मूल्यांकन करते समय यह भी ध्यान रखना चाहिए कि अनुवादक-2 की स्थिति कैसी है। यह भी संभव है कि वह पाठ-2 का पुनरनुवाद करते हुए उसे मूल से बेहतर बना दे या अधिक विकृत कर दे जिसमें अनुवादक का कोई दोष नहीं है।

ब्रिसलिन और बैरिन का प्रारूप इस प्रकार न तो वैचारिक दृष्टि से नया था और न ही व्यावहारिक दृष्टि से बहुत उपयोगी। किंतु इस संकल्पना में कई उपयोगी तत्व मौजूद थे। इनका प्रयोग करते हुए केंद्रीय हिंदी संस्थान में कुछ लघु शोध-प्रबंध तैयार किए गए (मुख्यतः डॉ. अशोक कालरा और डॉ. कृष्ण कुमार गोस्वामी के निर्देशन में) जिनमें इस मूल संकल्पना का संशोधित रूप प्रस्तुत किया गया। संकल्पना के अनुसार अनुवाद प्रक्रिया में वृद्धि, लोप, स्थानापत्ति और विकृति के संभावित दोषों को नाइडा द्वारा प्रस्तावित अनुवाद-प्रक्रिया के प्रारूप पर ढाल दिया गया अर्थात् उक्त चारों प्रकार के दोषों को विश्लेषण, अंतरण तथा पुनर्गठन के चरणों में खोजने का काम अनुवाद मूल्यांकन का मुख्य आधार मान लिया गया। यह मूल्यांकन किसी निष्कर्ष अनुवाद की तुलना के आधार पर किया जाता है। निष्कर्ष अनुवाद वस्तुतः आदर्श अनुवाद भी माना जा सकता है किंतु सर्वश्रेष्ठ या उत्कृष्ट अनुवाद नहीं। अर्थात् जिस अनुवाद के आधार पर किसी अनूदित कृति का मूल्यांकन किया जाए वह उस संदर्भ में आदर्श होगा। चाहे इसका अस्तित्व भौतिक हो अथवा मानसिक। मूल्यांकन की कसौटी को इस दृष्टि से देखने पर यह आवश्यक नहीं रह जाता कि किसी अनुवाद को अंतिम या पूर्णतया दोषहीन अनुवाद माना जाए।

इस पद्धति से मूल्यांकन काफी सरल और सहज हो सकता है। अनुवाद प्रक्रिया में प्रत्येक चरण की अपनी उपयोगिता है। जैसे-विश्लेषण के स्तर पर यह माना जा सकता है कि अनुवादक को मूलपाठ का भाषागत शैली तथा कथ्यपरक बोधन हो गया है। अतः इस चरण में यदि अनूदित रचना में कोई दोष पाया जाता है तो उसका अर्थ है कि अनुवादक को मूलपाठ समझ ही नहीं आया। वह अपने बोधन की क्षमता में होने वाली कमी को पूरा करने के लिए मूल में अनावश्यक रूप से कुछ ऐसी सूचना प्राप्त करता है, जो वहाँ है ही नहीं (वृद्धि) या किसी अंश को छोड़ देता है (लोप), या किसी अभिव्यक्ति के लिए उचित पर्याय न खोज पाने के कारण स्थानापत्ति कर देता है। मूलपाठ के बिल्कुल समझ न आने के कारण अनुवादक विकृति दोष भी कर सकता है। इस स्तर पर पाए जाने वाले अनुवाद दोषों की संख्या अधिक होने पर यह भी माना जा सकता है कि ऐसा अनुवादक अपने कार्य में इसलिए अक्षम है क्योंकि उसे मूलभाषा का बिल्कुल ज्ञान नहीं है।

अंतरण के स्तर पर उक्त दोषों के पाए जाने से यह सूचना मिलती है कि अनुवादक अपने कार्य में अभी कुशल नहीं हो पाया है। उसे दोनों भाषाओं में सामंजस्य स्थापित करने में कठिनाई हो रही है। मूल्यांकन की दृष्टि से ये दोष उतने गंभीर नहीं माने जा सकते जितने विश्लेषण स्तर पर पाए जाने वाले दोष हैं।

पुनर्गठन के स्तर पर यदि ये दोष पाए जाते हैं तो उससे यह सिद्ध होता है कि अनुवादक को लक्ष्यभाषा का समुचित ज्ञान नहीं है और इस कमी को अनुवादक से इतर कोई दूसरा व्यक्ति भी कर सकता है। सामान्य रूप से यह कार्य पुनरीक्षण के स्तर पर हो सकता है। इतना ही नहीं यदि पुनर्गठन के स्तर पर पहुँचते हुए अनूदित पाठ में कोई प्रयुक्ति संबंधी दोष रह गया हो तो उसे पुनरीक्षण(Vetting) द्वारा भी ठीक किया जा सकता है, अतः इस स्तर पर पाए जाने वाले अनुवाद दोष सतही माने जा सकते हैं। इस प्रकार इस प्रक्रिया में न केवल अनुवाद प्रक्रिया में होने वाले दोषों के आधार पर अनूदित कृति का मूल्यांकन हो सकता है अपितु उनके समाधान के लिए आवश्यक दिशाओं का भी निर्धारण हो सकता है। जैसे पुनर्गठन के स्तर पर पाए जाने वाले दोषों को एक संपादक भी ठीक कर सकता है, जिसे मूलभाषा का या अनुवाद का बिल्कुल भी ज्ञान नहीं है। यदि किसी पाठ में अंतरण के स्तर पर दोष दिखाई देते हैं तो अनूदित पाठ का ध्यानपूर्वक पुनरीक्षण करने से अच्छा पाठ तैयार हो सकता है। किंतु यदि विश्लेषण के स्तर पर अधिक दोष पाए जाएँ तो ऐसी अनूदित कृति को अनुवाद की श्रेणी से अलग कर देना चाहिए क्योंकि उसमें अच्छे अनुवाद की पहली शर्त अर्थात् मूलनिष्ठता की अपेक्षा भी पूरी नहीं होती। इस प्रकार अनुवाद के पुनरीक्षण और मूल्यांकन से अनुवादक की भाषा के स्तर, विषय ज्ञान और अनुवाद की क्षमता की जानकारी मिलती है।

5.6 अनुवाद मूल्यांकन के सोपान

अनुवाद मूल्यांकन के निम्नलिखित सोपान हैं

- मूलपाठ का उपर्युक्त आठ स्थितिजन्य आधारों पर विश्लेषण।
- स्थितिजन्य आधारों पर भाषिक आधार स्थापित करना।
- मूलपाठ के परिपार्श्व के आधार पर उसके प्रकार्यों का निर्धारण करना। अर्थात् यह पता लगाना कि कोई पाठ किस विशेष स्थिति के संदर्भ में प्रयुक्त हुआ है और उस विशेष स्थिति में उस पाठ की विशिष्ट अर्थवत्ता क्या थी?
- मूलपाठ के तार्किक और अंतर वैयक्तिक प्रकार्यों को स्थापित करना।
- मूलपाठ के समान अनूदित पाठ का भी विश्लेषण करना और मूलपाठ के साथ उसकी उन्हीं आधारों पर तुलना करना।
- दोनों पाठों में जो स्थितिजन्य आधारों के अंतर हैं उन्हें परोक्ष दोष मानना।
- इनसे इतर प्रत्यक्ष दोषों का निर्धारण।

इस प्रकार अनुवाद का मूल्यांकन करने पर न तो वह भावनात्मक, एकपक्षीय और तदर्थ मूल्यांकन होगा और न ही मूलपाठ से कटा हुआ अनुक्रिया पर आधारित आंशिक मूल्यांकन होगा। अनूदित कृति का इस प्रकार किया गया

मूल्यांकन मूल और अनुवाद की सर्वांगीण समतुल्यता को विशिष्ट प्रतिमानों के आधार पर प्रमाणीकृत करेगा और अनुवाद में पाए जाने वाले विभिन्न दोषों का कारण ढूँढने में भी सहायक होगा। अनुवाद मूल्यांकन का कार्य इस प्रकार एकल न होकर बहु-आयामी होता है।

5.7 अनुवाद मूल्यांकन के मुख्य आयाम

अनुवाद मूल्यांकन हेतु अनेक मनोवैज्ञानिक परीक्षाओं में; अनुवाद का सुयोग्य (जी.ए. मिल्लर तथा वी.जे. सेटर आदि) विद्वानों द्वारा मूल्यांकन, सांख्यिकीय सूचकों द्वारा आदर्श अनुवाद से तुलना तथा अनूदित पाठ के पाठकों की राय भी महत्वपूर्ण मानी गई है। इसके अतिरिक्त अनुवाद में अन्य व्यावहारिक पक्षों को भी जैसे जे.बी. कैरोल अनेक विद्वानों ने महत्वपूर्ण माना है ताकि अनुवाद अपने मूल उद्देश्य की पूर्ति कर सके।

अनुवाद मूल्यांकन की दृष्टि से अच्छे अनुवाद में चार गुणों का होना अनिवार्य माना गया है-(1) मूलनिष्ठता, (2) पठनीयता, (3) बोधगम्यता, (4) प्रयोजन सिद्धि। आइए इन पर क्रमवार चर्चा करें।

(1) मूलनिष्ठता

अनूदित पाठ में उन सभी सूचना तत्वों का आना आवश्यक है, जो मूलपाठ में अभिप्रेत हैं। यही मूलनिष्ठता है। मूलपाठ के कथ्य या विषय-वस्तु का अंतरण करते हुए उसकी विधा या शैली को भी ध्यान में रखना आवश्यक है। प्रयुक्ति के क्षेत्र में प्रशासन, विधि, विज्ञान की अपनी शब्दावली, शैली और मुहावरा होता है। अतः उसी के अनुरूप अंतरण की अपेक्षा रहती है। शब्द या वाक्य या प्रोक्ति के स्तर पर यदि मूलपाठ को पृष्ठभूमि में रखा जाता है तो सफल अनुवाद की संभावना अधिक रहती है।

(2) पठनीयता

पठनीयता की सबसे बड़ी कसौटी यह है कि अनुवाद अनुवाद न लगे, मूल लेखन जैसा प्रतीत हो। अच्छे अनुवाद की सबसे बड़ी पहचान यही है। पठनीयता का संबंध अभिव्यक्ति से है। एक कथ्य को अभिव्यक्त करने के लिए अनुवादक के पास कई विकल्प हो सकते हैं किंतु अनुवादक की सर्जनात्मक शक्ति मूलपाठ की सीमाओं से बंधी है, इसलिए वह अपनी शिक्षा, अभिरुचि और ज्ञान के कारण उनमें से किसी एक विकल्प को चुनेगा। यहाँ ध्यान देने की बात यह है कि उसने जिस विकल्प का चयन किया है उसका सामान्यतः लक्ष्यभाषा का विकल्प होना आवश्यक है अन्यथा वह बोधगम्य नहीं होगा। हालाँकि यह स्थिति कठिन है। यदि यह अनुवाद स्वाभाविक हो जाता है तो उसमें काफी मात्रा में बोधगम्यता और संप्रेषणीयता भी होगी।

(3) बोधगम्यता

पठनीयता और बोधगम्यता एक-दूसरे से जुड़े आयाम हैं। पठनीयता का संबंध जहाँ अभिव्यक्ति से है वहीं बोधगम्यता का संदेश से। यदि अनुवाद पठनीय होगा तो उसमें सहजता एवं स्वाभाविकता होने के साथ-साथ बोधगम्यता और संप्रेषणीयता भी होगी।

(4) प्रयोजन सिद्धि

यह तो आपने अनुवाद संबंधी चर्चा में अब तक जान लिया है कि अनुवाद कार्य एक सोदेश्य व्यापार है। अतः अनुवादक ने जिस प्रयोजन के लिए अनुवाद कार्य किया, अगर वह उसमें सफल हो जाता है तो अनुवाद भी सफल हो जाता है। लक्ष्यभाषा का पाठक अगर मूल संदेश को भलीभाँति समझ एवं आत्मसात कर लेता है तो इसका अभिप्राय यह है कि वह उसका प्रयोजन भी सिद्ध समझ जाएगा। इस दृष्टि से यह अनुवाद लक्ष्यभाषा में स्वीकार्य होने पर अपने प्रयोजन को सिद्ध कर लेता है। इस प्रकार मूलनिष्ठता, पठनीयता, बोधगम्यता और प्रयोजनसिद्धि अनुवाद-मूल्यांकन के मुख्य आयाम हैं।

इन सभी आयामों पर चर्चा के क्रम में यह भी बताना आवश्यक है कि मूलपाठ की शैली की रक्षा करना अनुवादक के लिए कठिन कार्य है। अनुवादक का व्यक्तित्व, उसकी भाषाशैली, उसकी सोच अनूदित पाठ में कहीं न कहीं आ ही जाती है, विशेषकर सर्जनात्मक साहित्य में। अतः अनुवाद कभी-कभी अनुवादक सापेक्ष हो जाता है किंतु

अनुवादक मूल्यांकन में आत्मपरकता और सापेक्ष तत्वों को स्थान न देना ही उचित होगा। दूसरे, मूलपाठ के भाव को लक्ष्यभाषा की प्रकृति के अनुरूप संजोना कोई सरल कार्य नहीं है। यदि अनुवादक भाषा अथवा संरचना पर ध्यान केंद्रित करता है तो भावों में व्याघात उत्पन्न होता है और भावों की अविकल पुनर्रचना करता है तो व्याकरण उसका साथ नहीं देता। ऐसी स्थिति में मूल्यांकनकर्ता का दायित्व बढ़ जाता है। इस स्थिति में मूल्यांकन की प्रविधि या पद्धति का विकास ऐसा होना चाहिए कि उसमें उपर्युक्त सभी लक्षण, आयाम, पक्ष और पहलू समाविष्ट हों जिससे कृति का समग्र मूल्यांकन वस्तुनिष्ठ और प्रयोजनसिद्ध हो।

इस प्रकार अनुवाद-मूल्यांकन एक जटिल, विवादास्पद और संवेदनशील प्रक्रिया है जिसे व्यवस्थित आधार देने के लिए प्रविधियों के विकास के लिए कई प्रयास हुए, किंतु फिर भी कोई सुनिश्चित और प्रामाणिक आधार नहीं मिल पाया। वास्तव में अनुवाद एक संश्लिष्ट प्रक्रिया है जिसकी पूर्ण प्रतिबद्धता मूलपाठ से है। किंतु अनुवाद के बाद अनूदित पाठ लक्ष्यभाषा का अंग होते हुए भी अपनी स्वायत्त सत्ता रखता है। मूलपाठ का सहपाठ होते हुए भी मूलपाठ से उसका संबंध टूट जाता है और वह लक्ष्यभाषा की व्यवस्था और परंपरा में पूर्णतया विन्यस्त और संयोजित हो जाता है। यही अनुवाद मूल्यांकन की सफलता है कि यह निर्णय हो सके कि अनुवाद के साथ पूर्ण न्याय हो पाया है और वह अपने आप में प्रामाणिक और सफल है।

वस्तुतः 'अनुवाद मूल्यांकन' केवल भावानात्मक दृष्टि से देखना मात्र नहीं है क्योंकि ऐसा मूल्यांकन एकांगी दृष्टिकोण वाला होगा। अनुवाद मूल्यांकनकर्ता यह परखता है कि क्या अनुवाद में मूल के भाव और अभिव्यक्ति सौष्ठव का परिरक्षण हो पाया है अथवा नहीं। अनुवाद की शब्दावली में यह परिरक्षण समतुल्यता को बनाए रखना है। जिस प्रकार अनुवाद में समतुल्यता की आधार दृष्टि लेकर अनुवाद कार्य किया जाता है उसी प्रकार मूल्यांकनकर्ता समतुल्यता के निष्कर्ष पर अनुवाद को कसता है और अनुवाद में व्याप्त दोषों का मूल खोजने का प्रयत्न करता है। अनुवाद मूल्यांकनकर्ता इस समतुल्यता को बनाए रखने के साथ-साथ अनूदित रचना को मूल रचना की सममूल्यता के प्रतिमान के आधार पर प्रमाणीकृत करने के लिए भी परखता है। सार रूप में यही कहा जा सकता है कि मूल्यांकन कार्य के अंतर्गत विषयगत प्रमाणिकता और प्रयुक्तिपरक औचित्य की दृष्टि से अनूदित सामग्री का मूल्यांकन निहित है।

अनुवाद मूल्यांकन के अनेक दूसरे आयाम भी है, इनमें अनुवाद के प्रकार्य आदि पक्ष सम्मिलित हैं। संप्रेषण व्यापार में वक्ता, श्रोता (पाठक), संदेश, संदर्भ, संहिता और संपर्क भाषिक संप्रेषण के प्रकार्य हैं तथा यह वक्ता (लेखक) अनुवादक-श्रोता (पाठक) की परस्पर अनूभूति के आधार पर चलता है। रोमन याकोब्सन और हैलिडे ने इन्हीं प्रकार्यों बोधपरक (संकल्पनात्मक) को अंतर वैयक्तिक तथा पाठपरक बतलाया है। भाषा में प्रकार्यों का भी अंतिम उद्देश्य आशय (Intent) को सफलतापूर्वक श्रोता को संप्रेषित करना ही है; अतः सी.के. ऑग्डन तथा आई.ए. रिचर्ड्स द्वारा प्रतिपादित भाषा प्रकार्य भी मूल्यांकन के लिए मानक बन जाता है। अनुवाद भाषिक प्रक्रिया ही नहीं, सर्जनात्मक और भावात्मक भी है। जुलियाना हाउस के अनुसार अनुवाद प्रक्रिया में अर्थ को परखना आवश्यक है। उनके अनुसार मूलपाठ के अर्थ, विश्लेषण के लिए अनुवाद के कोशगत, संदर्भगत तथा पाठगत होता है। कृष्णकुमार गोस्वामी ने जुलियाना हाउस के उपरोक्त पाठ प्रकार्य को समझाने हेतु भाषिक और भाषेतर आधार पर पाठ-विश्लेषण के प्रारूप के माध्यम से निम्नलिखित मूल्यांकन आधार निर्धारित किया है।

भाषिक आधार	**भाषेतर आधार**	
.....	भाषा प्रयोक्ता पर आधारित	भाषा प्रयोग पर आधारित
(क) वाक्य-स्तरीय	(क) भौगोलिक स्थिति	(क) माध्यम
(ख) शब्द-स्तरीय	(ख) सामाजिक स्थिति	(ख) सहभागिता
(ग) पाठ-स्तरीय	(ग) काल निर्धारण	(ग) सामाजिक संबंध
		(घ) सामाजिक दृष्टिकोण
		(ङ) विषयक्षेत्र

भाषिक आधार पर शब्द, वाक्य, पाठ से जहाँ वर्ण्य और अंतरवाक्यीय संबंधों की सूचना मिलती है, वहाँ पाठ के सामान्य और विशिष्ट गुणों की भी जानकारी मिलती है। भाषिक संरचना का यह मूल्यांकन तब तक प्रभावकारी नहीं हो पाएगा जब तक भाषेतर आधार पर भाषा-प्रयोक्ता तथा भाषा-प्रयोग के विभिन्न आयामों का विवेचन नहीं होगा।

सामान्यतः अनूदित पाठ का पाठक मूलभाषा का ज्ञाता नहीं होता है अतः मूल्यांकन एक पक्षीय तथा व्यक्तिनिष्ठ नहीं हो सकता। मूलपाठ से विलग अनुक्रियात्मक मूल्यांकन भी आंशिक मूल्यांकन ही होगा। अतः पूर्ण मूल्यांकन के लिए संभवतः पीछे वर्णित चार गुणों, मूलनिष्ठता, बोधगम्यता, पठनीयता तथा प्रयोजनसिद्धि का होना अनिवार्य है।

5.8 विषय विवेचन

अब तक की गई चर्चा के आलोक में अनुवाद मूल्यांकन के संदर्भ में यदि कुछ केंद्र बिंदुओं को पहचान पाए हैं तो इस निष्कर्ष पर पहुँचेंगे कि इस मूल्यांकन संबंधी विषय विवेचन के मुख्य बिंदु इस प्रकार हैं :

1. अनुवाद मूल्यांकन की आधारभूत अनुवाद सैद्धांतिक संकल्पना है अनूद्यता (ट्रांसलेटेबिलिटी अनुवादपरकता, अनुवादानुकूलता, अनुवादनीयता)। अनुद्यता का अभिप्राय है अनुवाद सममूल्यता स्थापित हो सकने की वास्तविक और संभाव्य स्थिति। इस प्रकार अनुवाद मूल्यांकन अनूद्यता के आकलन पर अवलंबित है-अनूद्यता अधिक है तो अनुवाद की श्रेष्ठता संभावित है; अनूद्यता कम है तो अनुवाद की दुर्बलता की आशंका है। यह आकलन मूल्यांकन प्रक्रिया का अंतरंग है और प्रक्रिया के हर चरण में समीक्षक की चेतना पर अंकित होता जाता है।
2. मूल्यांकन प्रणाली में अनुवाद सिद्धांत के क्षतिपूर्ति नियम की विशेष भूमिका है।
3. अनूदित पाठ की मूलपाठ से तुलना अनुप्रयुक्त विज्ञान की तुलनात्मक व्यतिरेकी विश्लेषण पद्धति से होती है। यह विश्लेषण प्रोक्ति विश्लेषण से समर्थित है और तदनुसार प्रतिज्ञप्ति (प्रतिपाद्य के भाषिक अर्थ पर आधारित घटक) विश्लेषण (बृहत् स्तर-मैक्रो लेवल से संबंधित) तथा भाषा संरचना-विश्लेषण (लघु स्तर-माइक्रो लेवल से संबंधित) के अधिक्रम में संयोजित है।
4. तुलनात्मक-व्यतिरेकी विश्लेषण से हमें निम्नलिखित जानकारी मिलती है -
   (क) मूलपाठ के गठन (भाषा-प्रयोग पाठ की बुनावट) पक्ष में क्षति हुई है या संदेश पक्ष में; और वह कौन-सा अंश है जो क्षतिग्रस्त हुआ।
   (ख) अनूदित पाठ में मूल क्षति की पूर्ति हुई या नहीं। यदि पूर्ति हुई तो किस युक्ति से, और यदि नहीं हुई तो उससे पाठक को कोई हानि हुई या नहीं।
5. इन प्रक्रियाओं से मूलभूत जानकारी भी मिलती है और अनूद्यता का आकलन भी होता जाता है। इस प्रक्रिया शृंखला की तर्कसंगत परिणति है साहित्य समीक्षा की प्रभाववादी भाषा में अनुवाद का मूल्यांकन, अर्थात् अनूदित पाठ से मूलपाठ के अनुवाद संबंध का मूल्यांकन जो समीक्षा पाठ/अधिपाठ के रूप में अभिव्यस्त होता है।
6. प्रक्रिया के विभिन्न चरणों की क्रमिकता केवल प्रतीयमान है, वास्तविक नहीं। वास्तव में मूल्यांकन प्रक्रिया एक अन्विति है जिसके विभिन्न चरण उसके आयाम हैं और एक-दूसरे को प्रभावित करते हैं-उनमें अन्योन्याश्रिता होती है। यह दृष्टिकोण साहित्यिक कृति की आंतरिक अन्विति के साथ संगत है।

5.9 सारांश

वास्तव में अनुवाद मूल्यांकन एक ज्ञानात्मक और अनुप्रायोगिक विधा है जिसमें अनुवाद कौशल का मूल्यांकन किया जाता है। इसमें मूलपाठ के परिप्रेक्ष्य में अनूदित पाठ के गुण-दोषों का विवेचन किया जाता है। यह विवेचन अनुवाद

कार्य की निष्पत्ति से होता है जो अनुवाद संशोधन और स्तर के संवर्धन में सहायक होता है। इस दृष्टि से मूलपाठ के कथ्य की पुनर्रचना का परीक्षण ही अनुवाद मूल्यांकन है जिसमें भाषायी इकाइयों के संयोजन और सृजन में निहित गुण-दोषों की जानकारी मिलती है। अनुवाद मूल्यांकन अनूदित कृतियों के प्रति सही अर्थों में पाठक वर्ग की सहिष्णुता लाने का महत् प्रयास है और इससे अंततः अनुवाद की ही महत प्रतिष्ठा होती है।

5.10 अभ्यास के लिए प्रश्न

1. मूल्यांकन का अर्थ बताइए?
2. स्पष्ट करें कि मूल्यांकन के लिए अंग्रेजी में किन पर्यायों का प्रयोग किया जाता है?
3. मूल्यांकन की दो प्रमुख पद्धतियाँ कौन-सी हैं?
4. नाइडा और टेबर द्वारा प्रस्तावित मूल्यांकन के आधार बताइए।
5. ब्रिसलिन और बेरिक द्वारा प्रस्तावित विषम तत्वों के मुख्य चार वर्ग कौन-कौन से हैं?
6. अनुवाद मूल्यांकन के मुख्य आयाम बताइए।
7. अनुवाद मूल्यांकन की दृष्टि से अच्छे अनुवाद में किन गुणों का होना अनिवार्य है?
8. अनुवाद मूल्यांकन की अधारभूत सैद्धांतिक संकल्पना अनूद्यता के बारे में बताइए।

5.12 शब्दावली

मूल्यांकन, पुनरीक्षण, पाठधर्मी, प्रभावधर्मी, मूलनिष्ठता, लक्ष्यनि ठता, पठनीयता, बोधगम्यता, वस्तुनिष्ठता, सममूल्यता, प्रयोजनसिद्धि।

5.13 कुछ उपयोगी पुस्तकें

- सुरेश कुमार, 2007, अनुवाद सिद्धांत की रूपरेखा (सातवाँ संस्करण), दिल्ली, वाणी प्रकाशन।
- कृष्ण कुमार गोस्वामी, 2008, अनुवाद विज्ञान की भूमिका, दिल्ली, राजकमल प्रकाशन।
- कृष्ण कुमार गोस्वामी, पूरन चंन्द टंडन (सं.), अनुवाद मूल्यांकन, नई दिल्ली, भारतीय अनुवाद परिषद।
- कृष्ण कुमार गोस्वामी, अन्नपूर्ण, ओ. प्र. प्रजापति, 2014, अनुवाद की नई परंपरा और आयाम, नई दिल्ली, प्रकाशन संस्थान।
- कैलाशचन्द्र भाटिया, अनुवाद कला : सिद्धांत प्रयोग, दिल्ली, तक्षशिला प्रकाशन।
- रवीन्द्रनाथ श्रीवास्तव एवं कृष्ण कुमार गोस्वामी (सं.), अनुवाद सिद्धांत और समस्याएँ, दिल्ली, आलेख प्रकाशन।
- दिलीप सिंह, साहित्येतर पाठ का संदर्भ, अनुवाद समीक्षा और मूल्यांकन।
- House, Juliana, 1977, Model for Translation Quality Assessment, Verlag, TBC.
- Nida, E.A&C Taber, 1975, The Theory and Practice of Translation, Leiden, EJ. Brill.